Impact Factor – 6.625 | Special Issue – 232 | February 2020 | ISSN – 2348-7143

INTERNATIONAL RESEARCH FELLOWS ASSOCIATION'S

RESEARCH JOURNEY

Multidisciplinary International E-Research Journal

PEER REVIEWED, INDEXED AND REFEREED JOURNAL

२१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

अतिथि संपादक
प्राचार्य डॉ. ए. एस. पैठणे

मुख्य संपादक
डॉ. धनराज टी. धनगर

कार्यकारी संपादक
डॉ. महेश गांगुर्डे

कार्यकारी सह-संपादक
प्रा. महेंद्र वसावे

For Details Visit To : www.researchjourney.net

Printed By : PRASHANT PUBLICATIONS, JALGAON

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2348-7143
February 2020
RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 232 : २१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

- अलका सरावगी के उपन्यासों में नारी चेतना (कलि–कथा : वाया बाइपास के विशेष संदर्भ में) ४७
  प्रा. महेंद्र गोरजी बसावे
- किन्नर जीवन का जीवंत दस्तावेज : तीसरी ताली ४९
  श्री. अनिल बाबुलाल सूर्यवंशी, डॉ. जिजाबराव विश्वासराव पाटील
- एक त्रासादानुभव – समाज का ५२
  प्रा. अविनाश बी. अहिरे
- कुसुम अंसल के उपन्यास में मूल्यविहिनता : 'एक और पंचवटी' के विशेष संदर्भ में ५३
  प्रा. डॉ. अनंत भालचंद्र पाटील
- मधु कांकरिया के कथा साहित्य में वैश्वीकरण ५५
  डॉ. संतोष मोटवानी
- बियोंड द जंगल ५७
  प्रा. डॉ. जयश्री गावित
- इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में राजनीति ५९
  डॉ. करुणा दत्तात्रय अहिरे
- ''बाबल तेरा देश में' उपन्यास में नारी विमर्श'' ६१
  प्रा. डॉ. आशा डी. कांबळे
- ममता कालिया के ''दौड़'' उपन्यास का विवेचनात्मक अध्ययन ६३
  प्रा. डॉ. वनिता त्र्यंबक पवार-निकम
- छप्पर उपन्यास में दलित विमर्श ६६
  प्रा. डॉ. अशोक दौलत तायडे
- सूर्यबाला द्वारा रचित 'अग्निपंख' उपन्यास में अभिव्यक्त विविध समस्याएँ ६८
  डॉ. बालकवि लक्ष्मण सुरंजे
- २१ वीं शताब्दी के यथार्थवादी उपन्यासकार डॉ. राजेंद्र मिश्र ७०
  दिनानाथ मुरलीधर पाटील, डॉ. संजयकुमार शर्मा
- ''२१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य'' ७२
  डॉ. जाधव अर्जुन रतन,
- 'आख़िरी कलाम' में निहित समकालीनता ७४
  डॉ. मिर्झा अनिसबेग रज्जाकबेग
- किसान जीवन की त्रासदी – 'आखिरी छलांग' ७६
  प्रा. दिलीप पी. पाटील
- ''इक्कीसवीं सदी के हिन्दी उपन्यासो में आदिवासी विमर्श – भगवानदास मोरवाल कृत 'रेत' के संदर्भ में'' ७८
  प्रा. डॉ. देवकीनंदन महाजन
- इक्कीसवीं शताब्दी के हिंदी आदिवासी उपन्यास ८०
  डॉ. राजेंद्र बाविस्कर
- गोविन्द मिश्र के उपन्यासों में अंकित आर्थिक बोध ८३
  प्रा. डॉ. जगदीश चव्हाण
- सूरज फिर उगेगा में चित्रित आदर्शोन्मुख यथार्थवाद ८६
  प्रा. डॉ. कृष्णा प्रल्हाद पाटील

PRINCIPAL
T.S.S's.Smt.V.U.Patil Arts &
Late Dr.B.S.Desale Science College
Sakri, Tal Sakri, Dist.Dhule

Scanned with OKEN Scanner

RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal ISSN: 2348-7143
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 232 : २१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य February, 2020

इक्कीसवीं सदी के हिंदी उपन्यासों में राजनीति

डॉ. करुणा दत्तात्रय अहिरे
हिंदी विभाग प्रमुख,
श्रीमती विमलबाई उत्तमराव पाटील कला व कै.डॉ.बी.एस. देसले विज्ञान महाविद्यालय साक्री, जि. धुळे

इक्कीसवी सदी नई चेतना एवं नए-नए परिवर्तनों की सदी है। जहाँ व्यक्तिको सर्वाधिक महत्त्व दिया गया है। इसके बावजूद कई ऐसी घटनाएँ-घट रही है, जिसके कारण पूरा भारतीय समाज चिंताग्रस्त है जैसे प्राकृतिक संपत्ति से खिलवाड औद्योगीकरण का बढते जाना, जनसंख्या में बढोत्तरी, शहरी करण के कारण तेजी से काँक्रीट के जंगल बढते जाना आदि समस्याओंसे ग्रसीत है। इस सदी के उपन्यासकारोंने समाज में स्थित राजनेताओंका राजकिय प्रभाव और सामाजिक स्थितियों का यथार्थ चित्रण किया है। देखा जाए तो राजनीति मानव-जीवन में अपनी अहम भूमिका निभाने का कार्य कर रही है। राजनीति का समाज पर इतना गहरा प्रभाव रहता है। मनुष्य् का व्यक्तित्व उससे प्राभावित हुए बिना रह नही सकता।

इक्कीसवी सदी का प्रथम दशक राजनीतिक उथल पुथल का दर्शक है जिसमें राजनेता एक आखाडे की भाँति एक दुसरे को मात देने का स्वयंबाजी मारने की होड में लगे प्रतीत होते है। इस सदी के उपन्यासकार अपने कृतियों में घटनाओं व पात्रों के माध्यम से राजनेताओं के चरित्र को कई रूपों में सामने लाने का प्रयास कर रहे है। राजनेता अपने पद की गरिमा का न ध्यान रखते हुए और पद का अनुचित लाभ उठाकर नारी एवं समाज का शोषण कर रहे है। वे स्वारस्थ् और स्वयं को सबसे श्रेष्ठ सिध्द करने की होड में लगे रहते है। जब वास्तविकता जनता के सामने आयी है तो उनका दोहरा चरित्र उन्हे जनता के सामने बेइज्जत कर देता है। असगर वजाहत की 'कैसी भागी लगाई' इस उपन्यास में जब वेस्टर्न यु.पी.में कम्युनल रॉयट्स बार-बार भडक जाने है तो सिन्हा साहब दुसरी पार्टी के नेताओं पर आरोप लगाते है। राजा साहब कहते है एडमिनिस्ट्रेशन की सबसे छोटी लेकिन बुनियादी शर्त है कि लॉ और ऑर्डर मेंनटेन रहे!. ये इंडियट इतना तक नही कर पाते! क्या हक है उन्हें गद्दियों से चिपके रहने का। मुल्क की सत्ता और रियासत पर अपना अधिकार जमाएं हुए नेताओं के बारे में संविधानिक उपन्यासकार महिपतसिंह 'अभि शेष है' उपन्यासमें संविधानिक लोकतंत्र के बारे में कहते है - लोकतंत्र का तकाजा यह है कि, अगर अदालत ने इंदिरा जी के खिलाफ फैसला दिया तो बडी आदालत का फैसला आने तक प्रधानमंत्री पद से इस्तीफा दें, और किसी सीनियर मिनिस्ट्र को प्रधानमंत्री की जिम्मेदारी सोंप दे। लेकिन इंदिरा जी ने यह करने की बजाय अपनी कोठी पर भीड इकट्ठा करनी शुरू कर दी। और उनका बेटा अपनी माँ की गद्दी बचाने के लिए भाडे पर लाए एग लोगों की भीड जमा कर रहा है। हरियाणा के चीफ मिनिस्टर को अपनी वफादारी दिखाने का मौका मिल गया और वह लोगों को ट्रकोंमें भर-भरकर दिल्ली भेज रहा है। वाहरी जम्हरियत, वाह रे लोकतंत्र।'

राजनेता बुध्दीजीवी वर्ग को राजनीति से दूर रहने की सलाह देते है, ताकि वे अपनी राजनीति बिना किसी के हस्तक्षेप से करते रहे। इस संदर्भ में रमेश कुंतल मेघ लिखते है- 'छात्रों, अध्यापकों तथा बुध्दिजीवियो को राजनीति से अलग रहने की सलाह सत्ताधारी पार्टी के नेताओं ने दी । इनका पालन करने वालों को कई तरह [illegible] और शांन्ति पुरस्कार भी मिले अतः सत्ताधरी नेताओं की राजनीतिक [illegible] विचारधारा को स्वीकार करके भी यह अराजनीतिक बना रह सका शक्ति की राजनीति याने पावर पॉलिटिक्स खेलने में माहिर होकर भी वह राजनीति यानि चुनाव-कार्यो से दूर रहा तथा सामाजिक पतन के प्रति आखे मुँढकर भी वह आधुनिक बनने का झुठा आत्मसत्य् पा गया उसमें कोई भी रिस्क् उठाने की हिम्मत न रही।

इस सदी के उपन्यासों में राजनेताओं के कई रूप चित्रित हुए दिखाई देते है, जिसे हम अर्थ की राजनीती अर्थात धन कमाने की राजनीती नसिरा शर्मा जी की जीरो रोड उपन्यास में एक नेता की इसी मनोकामना को सामने लाने का प्रयास किया है। नेता कहते है- 'ये मामला केवल धर्म व जाति का नही बल्की जेबे कर्म करने का है। अब तुम्ही बताओं जिसने जीवन भर मिठाई न बनाई है न बेची हो वह बिना कुद दिए हलवाई बन रहा है। राजनीति के अन्यायसंगत स्वरूप में माया का सर्वत्र पसारा हो गया है जो आज के दौर में सार्वभौम हो गया है, सत्ता के कर्णधार सबको अपने इशारों पर नचा रहा है और परेशान कर रहा है असे भय्या लढना-झगडना मारपीट दंगे फसाद किसे पसंद है। न हिंदु को न मुसलमान को। ये तो नेताओं का खेल है जब चाहे जहाँ फसाद करा दे। राजनेता अपने विरोधियों को निचे दिखाने के लिए अजिबसी तरकिबे अपनाते है भगवानदास ओखाल कृत 'रेत' इस उपन्यास में सावित्री मुरली बाबू को समझाते हुए कहती है- मुझे क्या पता था भाई साहब कि आपके विरोधी यहाँ तक गिर सकते है । राजनीति में सब संभव है। इसलिए अपनी छाया पर भी विश्वास नही करना चाहिए राजनीति में एक मैं हुँ जिसे जो मिला उस पर भरोंसा कर लिया।

राजनीति इतनी नीचे गिर चुकी है कि वे जनता की आवश्यकताओं को पुरा कर नही सकते। किसी भे विधायक कार्य को गती देने के बजाए उसे रोकने का और उसमें राजनीति के दाव पेंच लगाने मे ज्यादा शक्ती लगाते है। नासिरा शर्मा कृत उपन्यास 'कुइयाँ जान' में उठाई गई पानी की समस्या पर जब नेताओं ने आँख खोली तो यह उनके लिए राजनीतिक मुद्दा बन गया। जल तो मानव की मुलभूत आवश्यकता है, जिसका लोकहित में वितरण करना राजनेताओं का परम कर्तव्य् है, लेकिन वे अपनी राजनीतिक रोटियाँ सेकने का काम करते है। इस बारे में नासिराजी लिखती है '--- उन राजनेताओं का [illegible] होगा जो पानी देने से इन्कार कर रहे है। आंध्र प्रदेश के मुख्यमंत्री

PRINCIPAL
K.S.S's.Smt.V.U.Patil Arts &
Late Dr.B.S.Desale Science College
Sakri, Tal.Sakri, Dist.Dhule

Scanned with OKEN Scanner

ISSN : 2348-7143 February 2020 RESEARCH JOURNEY International Multidisciplinary E-Research Journal
Impact Factor (SJIF) - 6.625 | Special Issue 232 : २१ वीं शताब्दी का हिंदी उपन्यास साहित्य

गोदावरी का पानी देने से इनकार कर रहे है। उडिसा की महानदी का पानी आंध्र प्रदेश भेजा गया है । उडिसा की सरकार कहती है कि महानदी में हमारे अपने राज्य की जरूरतों से ज्यादा पानी नही है। जो हम बाहर दे सकें। राजनेता को बचाने के लिए अपराधियों को भी आश्रय देते है, और बाद में अपराधी नेताओं की कुर्सी के लिए खतरा बन जाते है इसतिए उन्हे अपने साथ रखना नेताओं के लिए अनिवार्य हो जाता है 'गैल और मन' इस विरेंद्र जैन कृत उपन्यास में राजनेता एक गिरोह के सरदार को पकडवाना चाहता है तो वह उन्ही की जुबान में उन्हे समझाता है वकील डॉक्ट्र कोर्ट कचेहरी सभी जगह भत्ता बाँधा हुआ है, और विधायक मंत्री के इशारे पर ही तो हमारे हौसले बुलंद करते है। नि:संदेह इक्कीसवी सदी के उपन्यासों में उपन्यासकारों ने अपने अनुभवों एवं जीवन के साक्षात्कारों के माध्यमसे स्वातंत्राता से पहले तथा बाद की राजनीति के प्रभावों का यथार्थ चित्रण किया है। इस सदी के उपन्यासकारोंने राजनेताओं के आचरण एवं सामाजिक व्यवहार में स्वार्थ भावनाओं को उजागर किया है। स्वयं को समाज का सेवक एवं क्रियाशिल व्यक्ति के रूप में प्रस्तुत करते है। जो आज के जीवन देशहित के लिए सबसे बडा खतरा है।

संदर्भ ग्रंथः

१. डॉ. रमेश कुंतल मेघ, आधुनिकता-बोध और आधुनिकीक पृ-१५७-१५८
२. असगर वजाहत, कैसी आगी लगाई, पृ-२२
३. राजेंद्र त्यागी, महाभारत का अभियुक्त, पृ-३२
४. वीरेंद्र जैन, गैल और मन, पृ-१०३
५. महीपसिंह, अभी शेष है, पृ-२२
६. नासिरा शर्मा, जीरो रोड, पृ-७३
७. असगर वजाहत, कैसी आगी लगाई पृ-११४
८. भगवानदास मोरवाल, रेत, पृ-२८१
९. नासिरा शर्मा, कुइयाँ जान, पृ-४०६

T.S.S's. Smt. V.U. Patil Arts & Late Dr. B.S. Desale Science College Sakri, Tal. Sakri, Dist. Dhule

PRINCIPAL
T.S.S's. Smt. V.U. Patil Arts & Late Dr. B.S. Desale Science College Sakri, Dist. Dhule

Scanned with OKEN Scanner